भगत रविदास – सबद ५
सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥
रागु गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४६

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥
पारु कैसे पाइबो रे ॥
मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥
जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥
बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥
करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥५॥
परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥
भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥

सार: भारतीय दर्शन में चार युगों की अवधारणा है- सतयुग (स्वर्ण युग), त्रेता युग (रजत युग), द्वापर युग (कांस्य युग) और कलियुग (लौह युग)। यह युग मिलकर समय की चक्रीय प्रकृति को

दर्शाते हैं जिसमें सृष्टि, पालन, विनाश और पुनर्नव-निर्माण शामिल हैं। लाक्षणिक रूप से, यह युग किसी भी समय की मन की स्थिति का प्रतीक हैं जो हमारे कर्मों, प्रतिक्रियाओं और उनके परिणामों को प्रतिबिंबित करते हैं। ऐसा मन जो कुछ निश्चित मान्यताओं और शंकाओं में जकड़ा रहता है और चल रही विकास की प्रक्रिया को पहचानने में विफल रहता है, वह कट्टर-रूढ़िवादी बन सकता है। इसके विपरीत, एक खुला, सजग और जागरूक मन, जो अस्तित्व के सार को ग्रहण करने के लिए तैयार रहता है, वह अधिक व्यावहारिक और यथार्थबोध से युक्त होता है।

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥

सतयुग, सत्यनिष्ठ विचारों का प्रतीक है। त्रेता युग कर्मकांड और पूजा-पद्धति में केंद्रित सोच का प्रतीक है। द्वापर युग नैतिक विकल्पों को लेकर दुविधाओं को दर्शाता है। मन की यह अलग-अलग अवस्थाएँ हमारे मन की उस यात्रा को दिखाती हैं जब विचारों में सहज सरलता से जटिलता की ओर बदलाव आता है।

तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥

तीनों युगों में विचारों की तीन अलग दिशाएँ होती हैं। जब मन नकारात्मकता की ओर झुकता है, यह कलियुग का संकेत है यानी लोहे के युग का प्रतिनिधित्व करता है, तब आत्म-चिंतन आध्यात्मिक सहारे का एकमात्र स्रोत बन जाता है। (१)

पारु कैसे पाइबो रे ॥

इधर से उस तरफ़ की सीमा कोई कैसे पार कर सकता है? यह वास्तविकता को समझने की खोज को दर्शाता है।

मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥

किसी ने मुझसे बात नहीं की, न किसी सच्चाई का बोध कराया। यह सजग जीवन के अभाव को दर्शाता है।

जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥
ताकि प्रगति और प्रतिगमन का चक्र समाप्त हो सके, यह सकारात्मक विश्वासों और नकारात्मक प्रलोभनों के बीच चल रहे उतार-चढ़ाव को दूर करने की इच्छा को उजागर करता है। (१)(विराम)

बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥
विविध धर्मों की विश्वास प्रणालियों में धर्म का अर्थ उस अदृश्य, सर्वव्यापक चेतना को देखना बताया गया है जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है।

कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥
कौन से कर्म मुक्ति और पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने की ओर ले जा सकते हैं? (२)

करम अक्रम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥
कोई सही और बुरे कर्मों के बीच अंतर कर, आध्यात्मिक ग्रंथों में दिए गए ज्ञान का पालन कर सकता है।

संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥
फिर भी, संदेह लगातार बने रहते हैं इसलिए संदेह से जुड़े अहंकारी घमंड को कौन समाप्त कर सकता है? (३)

बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥
बाहरी तौर पर पानी से सफ़ाई कर सकते हैं जबकि भीतर से मन कई बुराइयों से मैला हो सकता है।

सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥
फिर आंतरिक रूप से आध्यात्मिक शुद्धि कैसे प्राप्त की जा सकती है? बाहरी कर्मकांडीय शुद्धि उस हाथी के समान है जो नहाने के तुरंत बाद खुद को धूल-मिट्टी से ढक लेता है। यह दर्शाता है कि बाहरी दिखावा धोखे वाला हो सकता है। (४)

रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥
जैसे ही सूर्य उदय होता है, यह रात के अंत का प्रतीक है। यह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जिसे समस्त ब्रह्मांड पहचानता है। यह प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों पर प्रकाश डालता है जो सभी रचनाओं पर समान रूप से लागू होते हैं।

पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥५॥
केवल कसौटी से ही हम पहचान सकते हैं कि तांबा सोना नहीं है। यह दर्शाता है कि चीज़ों के वास्तविक मूल्य को समझने के लिए अक्सर केवल दिखावे से हटकर गहरी अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। (५)

परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥
सच्चा ज्ञान स्वयं परम पारस है जो जमी हुई, पूर्व-कल्पित मानसिक धारणाओं को रूपांतरित कर देता है।

उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥
जब मन अपने सहज आनंदमय स्वभाव में प्रवेश करता है तब वह अपनी कट्टर धारणाओं को खोल देता है और मानसिक बाधाओं से मुक्त हो जाता है। (६)

भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥
आंतरिक भक्ति के अनुशासन से, मन सच में स्थिर होकर, संदेह, लगाव और बुराइयों को समाप्त कर देता है। यह बताता है कि जब ध्यान सच्चा और स्थिर हो जाता है तब विचार भटकते नहीं हैं।

सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥
जब यह सार भीतर रहता है तब मन रूप और निराकार को एकत्व के रूप में देख आनंद लेता है। यह एक ऐसी स्थिति का सुझाव देता है जहाँ गुणवाले और गुण से दूर के बीच सामंजस्य दो

प्रतिस्पर्धी विचारों के बजाय एक निरंतर वास्तविकता बन जाती है। (७)

अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥
कई लोग आत्म-संयम के कई कर्मकांडीय तरीके अपनाते हैं लेकिन संदेह और भ्रम के जाल से स्वयं को मुक्त कराने में असमर्थ रहते हैं।

प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥
रविदास कहते हैं कि जब भीतर से प्यार और भक्ति की भावना नहीं जागती तब वह दुखी हो जाते हैं। यह उन कर्मकांडों से होने वाली निराशा को दिखाता है जो शांति और आनंद के गुण प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं। (८)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास कर्मकांडों की सतही प्रकृति से अपनी निराशा व्यक्त करते हैं। वह इन विधियों की प्रभावशीलता को चुनौती देते हैं और प्रश्न उठाते हैं कि क्या यह तरीके मन को शंका और भ्रम की बेड़ियों से मुक्त करा सकते हैं। सच्चा सार्वभौमिक प्रेम और भक्ति जगाने के बजाय, यह अक्सर सिर्फ़ दिखावटी पालन की ओर ले जाते हैं। वह सच्चाई की अधिक सार्थक खोज की बात करते हैं जो यह पहचानती है कि जो जीवंत ऊर्जा हम अलग-अलग रूपों में देखते हैं और जो असीम, निराकार चेतना है वह अपने मूल रूप में अविभाज्य और एक है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com